Dr. Sangita Kumari Saha
B.A-D-II (H) IIIrd Paper.

Continue....

Treatment of Unipolar Depression.

मनोवैज्ञानिकों एवं मनोरोग विज्ञानियों के पास आने वाले क्लायंट या रोगियों में से करीब 10% रोगी ऐसे होते हैं जो Unipolar depression से ग्रसित होते हैं। इनके Treatment के कई Method का प्रतिपादन किया गया है जो निम्न हैं :-

(i) Psychodynamic therapy.
(ii) behaviour therapy.
(iii) Interpersonal therapy.
(iv) cognitive therapy
(v) Yoga therapy
(vi) Biological therapy

(1) Psychodynamic therapy :- मनोगतिकी चिकित्सा में चिकित्सक यह पूर्वकल्पना करता है कि Unipolar depression का कारण वास्तविक एवं काल्पनिक क्षतियों के अचेतन के द्वंद्व जो दूसरों पर अत्यधिक निर्भरता दिखलाने से मिश्रित होता है, बताया गया है। चिकित्सक यहाँ विषादी व्यक्तियों के इन प्रक्रियाओं को चेतन में लाने की कोशिश करते हैं ताकि वे अपने दुःख दर्द के वास्तविक स्रोत को समझ सकें और उन्हें अपने आप को दूर रहना सीख सके। ऐसे चिकित्सक इन विषादी व्यक्तियों के साथ कुछ ऐसे मनोगतिकी प्रविधियों का भी प्रयोग करते हैं जिसे वे अन्य विकृतियों के रोगियों के उपचार में उपयोग करते हैं जैसे ऐसे चिकित्सक क्लायंट को चिकित्सा के दौरान दिखाये गये transference, resistance, साहचर्य एवं dream की व्याख्या करते हैं तथा अपने क्लायंट को गत अनुभूतियों एवं भावों का पुनर्मूल्यांकन करने में मदद करते हैं। ऐसा देखा गया है कि free-association ने एक रोगी को क्षति के आरम्भिक अनुभूतियों जिनसे उसमें विषाद उत्पन्न हो गया था, को Recall करने में मदद किया।

Ajanta PRODUCTS Officer

Scanned with CamScanner

मनोगतिकी चिकित्सक को यह उम्मीद रहता है कि विषादी विकार के उपचार के दौरान चिकित्सक तथा अन्य लोगों पर अपनी निर्भरता कम करता जाएगा और अपनी जिन्दगी से संबंधित परिवर्तन करता जाएगा।

मनोगतिकी चिकित्सा का उपयोग सफलता-पूर्वक विषादी रोगियों के उपचार में किया गया है फिर भी Shapiro et al 1994 का यह दावा है कि कि Unipolar depression के उपचार में कभी-कभी ही इस प्रविधि द्वारा सफलता मिलता है। इसके इस limited effectiveness के दो मुख्य कारण बतलाया है —

(I) विषादी व्यक्ति इतना अधिक निष्क्रिय होते हैं तथा थकान महसूस करते हैं कि वे चिकित्सा के दौरान विचार-विमर्श में शायद ही कभी ठीक ढंग से हिस्सा ले सकते हैं। इनका परिणाम यह होता है कि वे उस सूक्ष्म स्तर के सूझ का भी उपयोग नहीं कर पाते हैं जिनकी जरूरत इस चिकित्सा में होती है।

(II) अक्सर देखा गया है कि विषादी रोगियों मनोगतिकी चिकित्सा का त्याग सिर्फ इसलिए कर देते हैं, क्योंकि इसका स्वरूप लम्बा होता है एवं रोगियों को तात्कालिक लाभ की इसमें कोई उम्मीद नहीं रह जाती है। यही कारण है कि Svartberg & Stiles 1991 ने अपनी समीक्षा के आधार पर बतलाया है कि short-term psychodynamic approach विषादी रोगियों के उपचार में तुलनात्मक रूप से अधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

शोधकर्ताओं का यह अनुमान है कि मनोगतिकी चिकित्सा विषादी रोगियों के उपचार में सीमित उपयोगिता दिखलाता है फिर भी इस प्रविधि का उपयोग इस विकृति के रोगियों के उपचार में काफी किया जाता है।

—v—